શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૨૪૬

1608

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२८८

जगद्गुरु श्री हीर विजय सूरिजी

का

पूजा स्तवनादि संग्रह

प्रकाशक—

श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला ।

मु० वीरमगाम

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थमाला नं० ३०.

युग-प्रधान
जगद्गुरु श्री हीरविजय सूरिजी
का पूजा स्तवनादि संग्रह

संग्रहकर्त्ता
रतनचन्द कोचर, जयपुर।

सहायक
जयपुर निवासी बाबू चांदमलजी
चन्दनमलजी कोचर,
कलकत्ता।

प्रकाशक
श्री चारित्र-स्मारक ग्रन्थमाला,
मु० वीरमगाम, [गुजरात]

कीमत पूजा प्रेमियों को भेंट।

वी० सं० २४६६ क०चा०सं० २२	प्रथम संस्करण १००० जगत्गुरु जयन्ती	वि० सं० १९९७ ई० सं० १९४०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्रीः ॥

जगत्गुरु श्री हीरविजयसूरिश्वरजी का स्तवन

राग (टेर-घड़ी धन आज की सब को, मुबारक हो २)

सदा जय हो सदा जय हो, जगत्गुरुदेव की जय हो।
कुराशा नाथी के नन्दन, महावीर मार्ग के मण्डन।
विजय श्री हीर की जयहो॥ जगत्० ॥१॥
नमें प्रताप और अकबर, अजमखान देवड़ा जुक्कर।
हरे दिल की जो संशयहो॥ जगत्० ॥२॥
गुरु उपदेश को सुनकर लिखे फरमान में अकबर।
महिना छै की अभयहो॥ जगत्० ॥३॥
गुरुके गुण को गावे, धर्म भण्डार सुख पावे।
मति इज्जत व विजय हो॥ जगत्० ॥४॥
ऐसे गुरुदेव के क्रम में, झुकाऊँ शीर हरदम मैं।
बनूं रणजीत निर्भय हो॥ जगत्० ॥५॥

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू चांदमलजी चन्दनमलजी कोचर,

नं० ३३, अपर चीत्तपुर-रोड, कलकत्ता

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुग़ल सम्राट् प्रतिबोध वि० सं० १६४०

मुग़ल सम्राट् बादशाह अकबर जगद्गुरु भट्टारक श्री विजयहीर सूरिश्वरजी

श्री जगद्गुरु जी का संक्षिप्त परिचय ।

मुगल सम्राट अकबर को प्रतिबोध देकर अहिंसा परमो-धर्म का अनुरागी बनाने का मुख्य श्रेय जगद्गुरु श्रीहीरविजय सूरीश्वर जी को ही है। इसके अनेक ऐतिहासिक प्रमाण विद्यमान हैं। हम यहां पर थोड़े से ऐतिहासिक प्रमाणों के साथ, सूरीजी का संक्षिप्त परिचय भी देते हैं। जिस से सुज्ञ पाठक भली प्रकार समझ सकेंगे कि उस महापुरुष ने कितना पुरुषार्थ और प्रयत्न कर अपने समय के विद्यमान बादशाह सूबेदार, और अन्यान्य राजा महाराजाओं को धर्मोपदेश देकर जगद्गुरु विरुद को सुशोभित किया था।

सूरीजी महाराज का जन्म वि. सं. १५८३ में मार्गशीर्ष शुक्ला ९ सोमवार को गुजरात के उत्तरी किनारे स्थित पालनपुर शहर में हुआ था। आप ओसवाल जाति के थे। आप के पिता का नाम कुंराशाह और माता का नाम नाथीबाई था। आप का नाम हीरजी था। आप की बुद्धि-मेधा बहुत ही तेजस्वी थी, इतनी छोटी अवस्था में ही आपने पाँचो प्रतिक्रमण जीव बिचार, नवतत्व संग्रहणीसूत्र, योग शास्त्र, उपदेशमाला, दर्शन सीत्तरी चउशरणपयन्ना संग्रह इत्यादि धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया था। हीरजी जब बारह वर्ष के हुए तब इनके माता पिता का स्वर्गवास हो गया। बाद में हीरजी को वैराग्य प्राप्त होने से १३ वर्ष की छोटी सी अवस्था में वि. सं. १५९६ में मार्गशिर्ष शुदी २ सोमवार को ८ व्यक्तियों के संग, गच्छाधिपति शासन सम्राट आचार्य श्री विजय दान सूरिजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महाराज के पास पाटण शहर में दीक्षा स्वीकार की उस वक्त आपका नाम हीरहर्षमुनि रक्खा गया था। मुनिहीरहर्ष ने अल्प समय में ही अपने गुरूजी के पास से समग्र वाङ्मय शास्त्र का अध्ययन किया, बाद में उसी समय महाराष्ट्र प्रांत की प्रसिद्ध नगरी देवगिरी में आप न्याय शास्त्र पढने के लिये गये। वहां अनेक तर्क शास्त्र, तर्क परिभाषा, मितभाषणी, शशधर मणिकण्ठ वरद दाजि, प्रशस्त पदभाष्य, वर्ध्धमान, वर्ध्धमानेदु, किरणावली, चिन्तामणि, प्रमुख ग्रन्थोंकाअध्ययन किया, न्याय शास्त्र के प्रकाण्ड एवं धुरीण विद्वान बन कर हीरहर्षजी मरु देश में गुरूजी के पासआये। गुरुजी ने योग्यता देख कर वि. सं. १६०७ में नाडलाइ में पंडित पद, वि. सं. १६०८ में उपाध्याय पद, और वि. सं. १६१० में शिरोही में आचार्य पद दिया। आचार्य पद का उत्सव सुप्रसिद्ध राणपुर के मंदिर जी का निर्माता संघपति धरणशाहका वंशजऔर दूदाराजा का मंत्रीश्वर चांगा संघपतिने किया था। जिस दिन आप आचार्य पद से अलंकृत किये गये उसी दिन दूदा राजा ने राज्य में अहिंसा का पालन कराया था। वहां से आप पाटण पधारे और वहां के सूबेदार शेरखान के मंत्री समरथ भणसाली ने गच्छानुज्ञा का महोत्सव किया (जै. सा. सं. पृ. ५३८)

वि. सं. १६२१—२२ में वडाली में आचार्य श्री विजय दान सूरिजी का स्वर्गवास होने के बाद श्री हीरविजय सूरिजी तपागच्छ नायक एवं शासन सम्राट बने। वि. सं. १६२८ में श्रीविजयसेनसूरिजी को अहमदाबाद में आचार्यपद दिया,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और उसी साल में लोंकागच्छ के मेघजीऋषि ने ३० साधुओं के साथ में लोंकागच्छ की दीक्षा का त्याग कर श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के पास में संवेग दीक्षा स्वीकार की, सूरिजी ने उनका नाम मुनिउद्योत विजय जी रखा, उसी समय अकबरने गुजरातको पूरा जीत लिया था जिससे उनके सूबेदार के साथ आगरा से सेठ थानसिंह जी यहां आये थे और मेघजीकी संवेग दीक्षाका उत्सव उन्होंने किया था।

वि. सं. १६२८ से १६३८ के दशवर्ष के समय में सूरिजी ने मुसलमान सूबेदारों के अनेक परिषह एवं उपसर्ग सहकर अपनी साधुता, सरलता, सज्जनता एवं उदार वीरता का काफी परिचय दिया। सुवर्ण को जितना भी तपाया जाय अपनी स्वरूपता को ही प्रकाशित करता है।

उसी समय भारतवर्ष का सर्वे सर्वा शहेनशाह बादशाह अकबर था, उसने अपनी राजधानी देहली से उठाकर आगरा में स्थापित की और खुद आगरा से १८ मील दूर फतेहपुर-सीकरी में रहता था, सम्राट ने फतेहपुर सीकरी के पास में १२ कोश का विशाल डाबरसरोवर बनाया था,। अकबर ने अपने विनोद एवं धर्म बोध के लिये दीनइलाही नामक (ईश्वर का धर्म) धर्म विः सं० १६३५ चलाया था और अपनी राज सभा में अनेक धर्म के पंडितों को निमन्त्रण देकर बुलाये थे। निरंतर विविध धर्म गोष्ठी हो रही थी, एक दिन बादशाह अकबर ने कहा "मेरे महामंडल में सर्व दर्शनों में प्रसिद्ध ऐसा कोई साधु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुरुष है जो निष्पाप धर्म मार्ग का उपदेश करता हो ? सभा में से उत्तर दिया की जैनधर्म के श्रीहीरविजय सूरि ऐसे ही हैं" (जै. सा. सं. ई. पृ ५४०) बादशाह के कानों तक महाप्रतापी श्री हीरविजयसूरिजी का नाम पहुँच गया था। वहां एक बार चम्पाबाई (सेठ थानसिंहजी की माता) ने छै महीने के उपवास किये, उसका जलूस निकलाथा बादशाह ने पूछा यह जलूस किसका है, जावाब मिला कि एक बाई ने छै महीने के व्रत किये हैं, यह सुनकर बादशाह को आश्चर्य हुआ, उसने बाई को बुला कर उससे सब हाल पूछा छै महिने का निराहार व्रत सुनकर बादशाह चोकन्ना हो गया। आखिर चम्पा बाई को पूछा तुम किस की कृपा से यह महातप कर रही हो। चम्पा बाई ने कहा देव पार्श्वप्रभु और गुरु सूरिपुरंदर युग प्रधान भट्टारक श्री हीरविजयसूरिजी की कृपा से यह तप कर रही हूँ, बादशाह ने चम्पा बाई की तपश्चर्या की परीक्षा की और सुवर्ण का चूड़ा इनाम में दिया। इसी समय सूरिजी गुजरात में हैं ऐसा मालूम हुआ, बादशाह के दिल में सूरिजी महाराज के दर्शनों की उत्कट भावना जाग्रत हुई, और मौंदी और कमाल नामक दो आदमियों को अपना फरमान लेकर उनको गुजरात भेजे। दोनों आदमी अहमदाबाद के सूबेदार की चिट्ठी लेकर जैनसंघ के श्रावकों के संग उसी समय सूरिजी महाराज गंधार-बंदर में विराजमान थे वहां गये।

बादशाह का आग्रह पूर्वक निमन्त्रण प्राप्त कर बादशाह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

को प्रतिबोध देने के लिये सूरिजी ने गंधार-बंदर से बिहार किया; बिहार कर के जब आप "वडदलु" गांव आये तब स्वप्न में शासन देवी ने प्रत्यक्ष आकर कहा आप खुशी से बादशाह के पास जाइए महानलाभ एवं शासनप्रभावना होगी सूरिजी अनुक्रम से अहमदाबाद आये; अहमदाबाद के सूबेदार सिताबखां ने सूरिजीमहाराज को मानपूर्वक अपने पास बुलाकर बहुतही सत्कार सम्मान किया सूरिजी ने इनको धर्मोपदेश दिया; वहां से बिहार करते हुए आप अनेक सूबेदार, और राजाओं को प्रतिबोध देते हुए सरात्तर (सरोत्रा) पधारे; वहां के भिल्लराजा सहसार्जुन ने सूरिजी महाराज का बहुत आदर सत्कार किया, और सूरिजी महाराज के उपदेश से शराब, मांस और परस्त्री का त्याग किया साथ में अन्य भिल्लों ने भी त्याग किया, सूरिजी वहां से आबू की यात्रा करके शिरोही पधारे; शिरोही के देवडा राजा सुरत्राण ने सूरिजी का बहुमान पूर्वक प्रवेशोत्सव कराया; और राय सुरत्राण ने सह कुटुम्ब शराब, मांस आदि का परित्याग किया। ऐसे ही नागोर के सूबेदार को भी प्रतिबोध देकर; फलोधी तीर्थ की यात्रा करते हुए सांगानेर आदि होकर वि० सं. १६४० के आसाढ बदि १३ (गु० जेठ बदि १३) फतेहपुरसीकरि पधारे। प्रथम मुलाकात सम्राट अकबर के मुख्य मन्त्री अबुलफजल से हुई; और बाद में सविनय पूर्वकसम्राट ने भी सूरिजी के दर्शन किये, प्रथम मुलाकात में ही बादशाह पर सूरिजी का अच्छा प्रभाव पड़ा;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बादशाह ने प्रसन्न होकर सूरिजी महाराज को अपने पास रहा हुवा पुस्तक भण्डार अर्पण किया; बाद में सूरिजी चातुर्मास के लिये आगरा पधारे। वहां सूरिजी के उपदेश से चिन्तामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर मानमलजी चोरड़ीया ने बनाया, और सूरिजी के करकमलों से चातुर्मास के बाद प्रतिष्ठा करवाई, चातुर्मास में पर्यूषण के दिनों में बादशाह से अहिंसा पलवाई चातुर्मास बाद सूरिजी शौरीपुर तीर्थकी यात्राकोपधारे, वहांभीप्रतिष्ठा कराई, वहां से मथुरा पधारे वहां ५२७ स्तूपों को वंदना कर पुनः फतेहपुर सीकरी पधारे; सूरिजी के दर्शन कर बादशाह बहुतही प्रसन्न हुये। सूरिजी ने बादशाह को अहिंसा धर्म का तत्व समझाया; प्राणीमात्र का कल्याण कारी मार्ग दिखाया; बादशाह को अहिंसा धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न हुवा और पर्यूषणा पर्व के ८ दिन और अपनी तरफ से ४ दिन उसमें मिला कर १२ दिन समस्त भारत में अहिंसा पलवाई जाय इनका फरमान दिया; डाबर सरोवर में से मछलियों और अन्य पक्षीयों का शिकार बंद कराया; और भी कै एक दिन हिंसा बंद कराई। सूरिजी का अद्भुत त्याग उत्तम चारित्र महापांडित्यतथा शुद्ध ब्रह्मचर्य और आदर्श अहिंसा आदि गुणों से बादशाह सूरिजी पर बहुतहीप्रसन्न हुआ और सूरिजी को "जगद्गुरुजी" का अपूर्व मान का बिरुद दिया। वि० सं० १६४१

इसी समय बादशाह ने केदीयों को छोड़ दिये; पिंजरे में से पक्षीयों को मुक्त कर दिये। (जै. सा: सं. इ. पृ. ५४७)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूरिजी ने सेठ थानसिंहजी और राजमान्य जौहरी दुर्जनमल्ल कृत प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराई दोनों ने महान उत्सव किया और शान्तिचंदजी को उपाध्याय पद दिया गया वि० सं० १६४१ का चातुर्मासा सूरिजी ने फतेहपुर-सीकरी में किया वि० सं० १६४२ का अभिरामाबाद में और १६४३ का आगरा में चातुर्मास किया; जगद्गुरुजी ने पुनः २ बादशाह के पास जाकर जैन धर्म समझाया और बादशाह को जैन धर्म का अनुरागी बनाया; सम्राट अकबर को अहिंसा धर्म का और जैन धर्म का अनन्य अनुरागी बनाने का श्रेय श्रीहीरविजय सूरिजी को ही है। आपके बाद आपके प्रशिष्य वर्ग ने और अन्य साधु समुह ने बादशाह को उपदेश दिया है; बादेशाह ने उनका यथोचित सत्कार सन्मान भी किया है; किन्तु मुगल सम्राटों का दरबार जैन साधुओं के लिये खोलने का मान जगद्गुरूजी को ही है; और प्रथम के समर्थ उपदेशक को ही सम्राट अकबर को जैनधर्मका अनुरागी बनानेका मान मिल सकता है अन्य को नहीं।

सम्राट के दरबार में सूरिजी का महत्व का स्थान था इसलिये अबुलफजल ने अपनी आइनेअकबरी में अकबर के दरबार के विद्वानों का पांच विभाग किया है। उसके प्रथम विभाग में श्री हीरविजयसूरिजी का नाम है, और पांचवे विभाग में आपके शिष्यरत्न श्री विजसेनसूरिजी का और उ० श्री भानुचन्द्रजी का नाम है। जगद्गुरुजी के सदु-पदेश से अकबर के जीवन में जो परिवर्तन हुवा था। इनके लिये अलबदाउनी अपने ग्रंथ में लिख रहे हैं कि "खास तौर से

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्राट अन्य संप्रदाय के विद्वानों से सुमुनियों (श्रमण, जैन साधु) और ब्राह्मणों के साथ ज्यादा समय एकान्त में बैठकर बात चीत करता था", "इससे सम्राट ने इस्लाम धर्म मान्य पुनर्जन्म का सिद्धान्त को, कयामत का दिन और उस संबन्धी बातों को और अपने पेगंबर संबन्धी खयालों से श्रद्धा हटाली थी"।

डो० वि० स्मिथ लिखते हैं"कि जैन साधुओं ने निःसन्देह वर्षों तक अकबर को उपदेश दिया था। बादशाह के कार्यों पर इस उपदेश का बहुत प्रभाव पड़ा था। उन्होंने बादशाह से अपने सिद्धान्तों के अनुसार इतने आचरण कराये कि लोग यह समझने लग गये कि बादशाह जैनी होगया।" (अकबर के जैन उपदेशक ले० वि० स्मिथ)

डा० स्मिथ महाशय "अकबर" नामक अपनी पुस्तक के पृष्ट १६६ में लिखते हैं कि "सन् १५६२ के बाद उसकी जो कृतियां हुई हैं, उनका कारण बहुत अंशों में उसका स्वीकार किया हुआ जैनधर्म ही था, अबुलफजल ने विद्वानों की जो सूची दी है उसमें उस समय के तीन महान समर्थ विद्वानों के नाम आये हैं। वह हीरविजयसूरि, विजयसेनसूरि और भानुचन्द्र उपाध्याय ये तीनों जैन गुरु या धर्माचार्य थे।"

डा० स्मिथ की "अकबर" नाम की पुस्तक में एक मार्के की बात यह है कि उन्होंने उक्त पुस्तक के पृष्ट २६२ में "पिन हरो" (Pinheiro) नाम के पोर्टुगीज पादरी के पत्र के उस अंश को प्रकट किया है, जो ऊपर की बात को जाहिर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करता है। यह पत्र उसने ता० ३ सितंबर सन् १५६५ ईस्वी के दिन लाहौर से लिखा था उसमें उसने लिखा है—" He follows the sect the Jains (Vertic) "अर्थात् अकबर जैन सिद्धान्तों का अनुयायी है" ऐसा लिखकर उसने कैई जैन सिद्धान्त भी उसमें लिखे हैं। इस पत्र के लिखने का वही समय है कि जिस समय विजयसेन-सूरिजी लाहौर में अकबर के पास थे। श्री जगद्गुरुजी के धर्मोपदेश के प्रताप से ही सम्राट् अकबर के विचारों में जो परिवर्तन हुआ था, उन पर प्रकाश डालते हुए अबुलफजल 'आइने अकबरी में' लिखते हैं "अकबर कहता था कि मेरे लिये कितनी सुख की बात होती यदि मेरा शरीर इतना बड़ा होता कि मांसहारी लोग केवल मेरे शरीरही को खाकर संतुष्ट होते और दूसरे जीवों का भक्षण न करते। अथवा मेरे शरीर का एक अंश काट कर मांसाहारियों को खिला देने के बाद यदी वह अंश वापिस प्राप्त होजाता तो भी मैं बहुत प्रसन्न होता। मैं अपने शरीर द्वारा मांसाहारियों को तृप्त कर सकता" (आइने अकबरी खंड ३ रा पृष्ट ३६५)

जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरिजी और आपके शिष्य प्रशिष्यों के ही उपदेश से सम्राट अकबर ने भारत में छै महिना तक अहिंसा पलाई शत्रुंजय आदि पाँच जैन तीर्थों के टेक्स माफ कर दिये; और यह सब तीर्थ जगद्गुरुजी को अर्पण किये, जजीया टेक्स माफ किया, गाय, भैंस, बैल,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आदि की हिंसा बन्द करवाई, मृत्यु प्राप्त का धन लेना बन्द कर दिया बादशाह ने शिकार खेलना और मांसाहार करना बन्द कर दिया, जैन तीर्थ, जैन मन्दिर हिन्दू तीर्थ और हिन्दू मन्दिरों की भी रक्षा कराई।

पूज्य जगद् गुरूजी महाराज और आपके प्रतापी एवं विद्वान शिष्य प्रशिष्यों के उपदेश से सम्राट् अकबर ने छै महिने तक भारत में अहिंसा पलवाई थी इनके दिन इस मुताबिक है। "पर्युषणा पर्व में बारह दिन, वर्षभरके सर्व रविवार, सोफियान दिन, ईद के दिन, संक्रान्ति की सब तिथियें, जिसमासमें सम्राट अकबरका जन्महुवाथा वहपूरा-महीना, मिहिर के दिन, नवरोज के दिन, सम्राट अकबर के तीनों पुत्र के जन्म जिस जिस दिन में और जिस जिस महीने में हुवा था वह सब (तीन) महीनें, रजब (मोहरंम) के दिन, इसी तरह कुल छै महिने और छै दिनों में अहिंसा पलवाई थी। (जै० सा० सं० इ० पृष्ट ५४६) धन्य है प्रतापी जगद् गुरू सूरिजी को आपके प्रताप से एक मुसलमान सम्राट ने अहिंसा-धर्म का पालन एवं स्वीकार कर अपनी आत्मा का और समस्त भारत का कल्याण किया।

जैन ग्रंथकारों ने जगद्गुरु के उपदेश से सम्राट ने जो छै महिने अहिंसा पलवाई थी इनके उल्लेख किये हैं, किन्तु एक कट्टर मुस्लिम लेखक जो कि उसी समय सम्राट अकबर की सभा में विद्यमान था वह अलबदाउनी भी लिखता है कि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्राट ने महीनों तक अहिंसा पलवाई थी अमुक महीने में किसी भी जीव का बध-हिंसा न करने का हुकम निकाला था देखिये इनके शब्द

"In these days (991—996—1583 A. D.) new orders were given, The killing of animals on certain days was forbidden, as on Sundays because this day is sacred to the Sunduring the first 18 days of the month of Farwardin, the whole month of Abein (the month in which his Majesty was born) and several other days to please the Hindoos. This order was extended over the whole realm and capital punishment was inficeted on every one who acted against the command" Badaoni P. 321.

भावार्थ "इन दिनों (हि. सं. ९९१—९९६=ईस. १५८३) में नये हुकम निकाले गये कितनेक दिन जैसे कि रविवार सूर्य का दिन होने से सर्व रविवार, फरवर दिन, महीने के शुरुआत के १८ दिन, अबेन मास कि जिसमें सम्राट अकबर का जन्म हुवा था वह सारा महीना, उन्हीं दिनों में हिन्दुओं को खुश करने के लिये समस्त भारत में सर्वथा जीव हिंसा का निषेध किया गया था, इस हुकम के विरुद्ध जाने वाले को सख्त सजा-गर्दन मारने की सजा दी जाती थी" इसमें जहां

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हिन्दू शब्द लिखा है वहां जैन शब्द ही समझने का है क्योंकि जैनाचार्य-जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरीजी के उपदेश से ही सम्राट ने अहिंसा स्वीकार की थी, और ऊपर ही० सं० ६६१ लिखा है वह ६६६ चाहिये, । और आइनेअकबरी पृ० ३३३१ में लिखा है कि रविवार और तहेवार के दिनों में पशुओं की हिंसा न करने को हुकम निकाले गये थे। (जै० सा० सं० इ० पृ० ५४९—५५०)

श्रीयुत् रामस्वामी ऐयंगर एम. ए. एल. टी. नामक एक अजैन विद्वान अकबर और जैनधर्म नामक लेख में लिखते हैं कि 'भानुचन्द्र महोपाध्याय थे, उन्होंने अकबर को सूर्य के सहस्र नाम सिखाये और ई० सन् १५६३ में अकबर से कई ऐसे फरमान लिखवाये जो जैन समाज के लिये बहुत ही उपयोगी थे। भानुचन्द्र के पश्चात (भानुचन्द्रजी भी लाहोर में ही थे तब) विजयसेनसूरिजी को अकबर ने लाहौर में आमंत्रण दिया। उन्होंने लाहौर में ३६३ विद्वान ब्राह्मणों को बाद में परास्त किया अकबर इससे बहुत संतुष्ट हुआ और उन्हें 'सवाई' की पदवी प्रदान की, उन्होंने भानुचन्द्रजी को वहीं उपाध्याय पद दिया। इस विधि के करने में ६०० रुपये व्यतीत हुये, यह सब खर्च अबुलफजल ने दिये थे। यह विश्वास किया जाता है कि भानुचन्द्रजी अकबर के अन्त समय तक उसके पास ही रहे थे। (अकबर जैन धर्म पृष्ट-१०)

श्री जगद्गुरु जी महाराज के उपदेश से सम्राट अकबर ने जो अहिंसा पलवाई थी इनके अनेक प्रमाण मिलते हैं जिसमें से हमने थोड़े प्रमाण उध्धृत किये हैं किन्तु उस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समय के खरतर गच्छ के प्रसिद्ध आचार्य श्री जिनचन्द्र सूरिजी को मुलतान के लिये एक फरमान प्राप्त हुआ था इसमें भी लेख मिलता है कि "उन्हों (जिनचन्द्रसूरि) ने प्रार्थना की कि इस से पहिले हीरविजयसूरि ने सेवा में उपस्थित होने का गौरव प्राप्त किया था और हर साल बारह दिन मांगे थे, जिनमें बादशाही मुलकों में कोई जीव मारा न जावे और कोई आदमी किसी पक्षी, मछली और उन जैसे जीवों को कष्ट न दे। उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गई थी। अब मैं भी आशा करता हूं कि एक सप्ताह का और वैसा ही हुक्म इस शुभ-चिन्तक के वास्ते हो जाय." (युः प्रः जिनचन्द्रसूरि पृ--२७८)

इन सब ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध है कि जगद्गुरु श्री विजयहीरसूरीश्वर जी और उनके शिष्य परिवार ने सम्राट अकबर पर अहिंसा की अमिट छाप जमादी थी, ऐसे महाप्रतापी सूरि पुंगवने ही सम्राट को प्रतिबोध दिया और अहिंसा की भागीरथी भारत में बहाई, सूरिजी ने अनेक नगरों में प्रतिष्ठायें कराई अनेक शिष्य बनाये आपकी आज्ञा में २५०० साधु थे, १०८ पंडित थे और ७ उपाध्याय थे। आप महातपस्वी थे आप ने अपने जीवन में जो मुख्य तपस्या की थी उस का उल्लेख इस प्रकार है १८० बेले, २२५ तेले २००० आंबील २००० निवी बीस स्थान की तपस्या बीस दफे ग्यारह महीने की प्रतिमा इनके अलावा सूरिमन्त्र आराधन समय और दूसरी भी तपस्या करने का लेख मिलता है। विशेष के लिये देखो हीरसूरि रास, आप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्राट अकबर को प्रतिबोध देकर गुजरात की तरफ पधारे थे तब सम्राट के आग्रह से उनको प्रतिबोध देने के लिये शान्ति-चन्द्रजी को सम्राट के पास रख कर गुजरात में पधारे। रास्ते में अनेक राजा महाराजाओं को प्रति बोध दिया शासन प्रभावना की, गुजरात में पधारने के बाद आपने उ. भानु-चन्द्रजी और सिद्धिचन्द्रजी को सम्राट के पास भेजे थे।

और बाद में बादशाह अकबर का आग्रह पूर्वक निमन्त्रण आने से वि. सं. १६४९ में आचार्य श्री विजयसेनसूरिजी को भेजे थे। आपने भी बादशाह पर बहुत ही अच्छा प्रभाव जमाया था। सूरिजी गुजरात में विचरते हुये सौराष्ट्र में सिद्ध गिरी की यात्रा को पधारे वहां से वि० संवत् १६५२ का चातुरमास ऊंना में कियाथा तब भादवा सुदी ११ गुरुवार को शुभ ध्यान करते हुऐ रात्रि को स्वर्ग वास पधारे, सम्राट ने सूरि जी के स्मारक मन्दिर के लिये ८४ बीघा जमीन भेट दी, सूरिजी का विशेष जीवन जानने के लिये श्रीहीर सौभाग्य महाकाव्य, विजय प्रशस्ति महाकाव्य, हीर सूरिरास, जगद्-गुरु काव्य, कृपारसकोश, विजय देव महात्म्य, पट्टावली समुच्चय, आइने अकबरी, उपाध्याय भानुचन्द्र चरित्र, वैराट नगर मंदिर का शिला लेख, श्री शत्रुंजय तीर्थ प्रशस्ति, मालपुरा का मंदिर का शिला लेख, सूरीश्वर और सम्राट जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास, वी. ए. स्मीथ का 'अकबर" सम्राट के फरमान आदि अनेक ग्रन्थ हैं जिज्ञासु सज्जन वहां से देखलें।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आभार प्रदर्शन

जगद्गुरु श्री हीरविजय सूरिजी की पूजा स्तवनादि संग्रह पुस्तक श्री संघ के हाथ में रखते हुए बहुत हर्ष होता है। इस में जो बड़ी पूजा है वह हमारी प्रार्थना से पू० पा० धर्मप्रचारक शासन दीपक मुनिमहाराज श्री दर्शनविजयजी महाराज ने बनाई है। आप त्रिपुटी का यह चातुर्मास जयपुर संघ की विनती से यहाँ ही हुवा है। यह हमारे संघ के लिये परम सौभाग्य का विषय है। आपके उपदेश से यहाँ अनेक धर्म कार्य हुये हैं और शासन प्रभावना अच्छी हुई है। जयपुर के इतिहास में सदा अमर रहने वाला बड़खेड़ा का छरीवालासंघ आपके उपदेश सें श्रीयुत मांगीलालजी गोलेच्छा ने निकाला था।

यह "बड़ी पूजा" यहां के सब से प्राचीन श्री तपों के मन्दिरजी में विराजमान श्री जगद्गुरुजी की पादुका समक्ष चतुर्विध संघ द्वारा बड़े समारोह पूर्वक पढ़ाई गई थी।

गुरुदेव की बड़ी पूजा यहीं बनी और प्रथम यहीं पढ़ाई गई इसे यहां का संघ परम सौभाग्य समझता है।

पू० पा० शास्त्र विशारद जैनाचार्य श्री विजयधर्मसूरिजी के उपदेश से आगरा श्री श्वे० जैन संघ द्वारा प्रकाशित जगत् गुरु श्री हीरविजयसूरिजी की अष्टप्रकारी पूजा और स्वतनादि पुस्तक छपी थी उसका हमने सब साहित्य उद्धृत किया है। इसलिये हम आप सबका आभार मानते हैं।

इस पुस्तक के संग्रह करने में त्रुटि या अशुद्धि रह गई हों पाठकगण इसके लिये मुझे कृपा कर सूचित करें कि द्वितीय आवृति में सुधार कर दिया जायगा।

रतनचन्द कोचर जयपुर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहायक का परिचय

इस पुस्तक के सहायक महानुभाव का संक्षिप्त परिचय देना उचित समझते हैं। आपके दादाजी बीकानेर निवासी थे, आपका जन्म वि० सं० १८७५ में हुआ था, आपका नाम गोरूमलजी था, आप व्यापारार्थ जयपुर पधारे और यहां ही कायम का वसावट कर लिया; आप व्यापारिक प्रवृत्ति बैठाते रहे थे, और साथ में सामाजिक और धार्मिक कार्य भी अच्छी तरह करते थे। जयपुर का सबसे प्राचीन "तपों का मन्दिर" के कार्यकर्त्ता एवं ट्रस्टी थे। आपके समय में मन्दिरजी में अच्छी तरक्की हुई थी। आपके सौभाग्यमलजी, समीरमलजी, हमीरमलजी और फतेलालजी चार पुत्र थे। आप अच्छी तरह धर्म ध्यान करते हुए वि० सं० १९६६ के प्रथम श्रावण सुदी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके उस समय चार पुत्र के अलावा नव पौत्र और ४ पड़ पौत्र थे। जिनका नाम यह है दीपचन्दजी, रूपचन्दजी, अमरचन्दजी चाँदमलजी कन्हैयालालजी, भूरामलजी, गंभीरमलजी, नेमचन्दजी, प्रेमचन्दजी पौत्र और गुलाबचन्दजी, मेघराजजी, चन्दनमलजी, रतनचंदजी पड़ पौत्र थे।

फतेलालजी के बड़े पुत्र का नाम चाँदमलजी है जिनका जन्म वि० सं० १९३१ के मार्गशीर्ष बुदि २ को जयपुर में हुवा था, आपके पुत्र का नाम चन्दनमलजी है और कलकत्ते में जवाहरात का व्यापार करते हैं। फर्म का नाम चाँदमलजी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चन्दनमलजी कोचर पड़ता है। इस समय आपने व्यापार में अच्छी उन्नति की है, चाँदमलजी इस समय जयपुर के प्राचीन तपों के मन्दिर के ट्रस्टी हैं और "श्री जयपुर ज्वेलर्स एसोसियेशन कलकत्ता" के सभापति हैं और आप जयपुर वालों को तन मन धन से यथा शक्ति सहायता पहुँचाते हैं, यह बात किसी जयपुरवासियों से छिपी नहीं हैं और आपके एक पौत्र है जिसका कि नाम शिखरचन्द है।

चन्दनमलजी की धर्मपत्नी दौलतबाई के ज्ञान पंचमी के उद्यापन निमित यह पुस्तक प्रकाशित करने में आपने पूर्ण सहायता दी है। इसलिये आपको धन्यवाद देते हैं।

मन्त्री-श्री चारीत्र-स्मारक ग्रन्थमाला,
बीरम गाम, (गुजरात)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री जगद्गुरु स्थापनादि मंत्र

१. आह्वान मंत्र—(आह्वान मुद्रा करके बोलना)

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ युगप्रधान,भट्टारक श्री हीरविजयसूरि जगद्गुरो ! अत्र अवतर अवतर स्वाहा।

२. स्थापना मंत्र—(स्थापन मुद्रा करके बोलना)

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ युगप्रधान भट्टारक श्री हीरविजयसूरि जगद्गुरो ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा।

३. सन्निधि करण मंत्र—

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ युगप्रधान भट्टारक श्री हीरविजयसूरि जगद्गुरो ! मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा।

श्री जगतगुरु की अष्टप्रकारी पूजा की सामग्री—

(१) पंचामृत कलश	(५) दीपक
(२) केसर चंदन	(६) सवापाव या सवासेर अक्षत
(३) फूल फूलमाला	(७) नैवेद्य ५ या ३६ या ५८
(४) धूप	(८) फल ५ या ३६ या ५८

❀ शुद्धि अशुद्धि ❀

पृ० ११ पं० १३ मुद्रित—पंडित एक सो आठ थे,
शुद्धि—पंडित एक सो साठ थे,

पृ० १२ पं० २ मुद्रित—जम्बू सूत्र सुनाया ॥ ज० ॥ ३ ॥
शुद्धि—जम्बू वृत्ति बनाया ॥ ज० ॥ ३ ॥

पृ० १३ पं० ८ मुद्रित—सोलसो तेपन भादो में,
शुद्धि—सोलसो बावन भादो में,

पृ० १३ पं० ११ मुद्रित—सुन कर दुःख दिल में धरे,
शुद्धि—दिखावे गमी, मुगट छोड़,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ वन्दे वीरम् श्रीचारित्रम् ॥

जगत्गुरु श्रीविजय हीरसूरीश्वरजी की

बड़ी पूजा

प्रथम जल पूजा

-दोहा-

जय जय सुमति जिणंदजी, जय सुपार्श्व जिनन्द।
जय जय आदिश्वर प्रभो, जय जय पार्श्व जिनंद ॥ १ ॥

जय जय सूरि वाचक मुनि, जिन शासन शिणगार।
जग गुरु हीर सूरीश्वरा, युगप्रधान अवतार ॥ २ ॥

जय चारित्र विजय गुरु, चरणमें शीष नमाय।
जग गुरु की पूजा रचूं, सबही को सुखदाय ॥ ३ ॥

(ढाल १)

(तर्ज—आवो आवो आदीश्वर बाबा, ग्रहो इक्षु रस दान)

आवो आवो ओ प्यारे सज्जन, करो गुरु गुण गान ॥ टेर ॥

महावीर के पाट परंपर, हुये श्री युग प्रधान।
वचन सिद्ध और उग्र तपस्वी, जगद्चंद्र सूरि जाण ॥ आवो ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जिनके चरन में शीष झुकावे, मेदपाट का राण।
तपा तपा कह के बुलावे, जैत्रसिंह बलवान ॥ आवो ॥ २ ॥

श्री देवेन्द्र सूरीश्वर त्यागी, देव पूज्य श्रुतवान।
कर्म ग्रन्थ आदि शास्त्रों का, किया जिनने निरमाण ॥ आवो ॥ ३ ॥

दादा साहेब धर्मघोष सूरि, त्यागी युग प्रधान।
महामंत्रवादी व प्रभाविक, हुये धर्म के प्राण ॥ आवो ॥ ४ ॥

देवपत्तन में मंत्रपदों से, सागर रत्नप्रधान।
गुरु के चरणों में उछाले, रत्न ढेर को आन ॥ आवो ॥ ५ ॥

निर्धन पेथड़ जिनकी कृपा से, बने बड़ा दिवान।
शासन का झंडा फहरावे, गुरुकृपा बलवान ॥ आवो ॥ ६ ॥

जिनके वचन से यत्न कपर्दी, छोड़े मांस बलिदान।
सेवक होकर शत्रुंजय पर, पावे अपना स्थान ॥ आवो ॥ ७ ॥

जोगणियों ने कारमण कीना, चहा मुनियों का प्राण।
उनको पाटे पर चिपटा कर, दिया गुरु ने ज्ञान ॥ आवो ॥ ८ ॥

गुरुके कण्ठको मंत्र से बांधा, यूं ली उनसे वाण।
तपगच्छ को उपद्रव नहीं करना, स्थंभित कर अज्ञान ॥ आवो ॥ ९ ॥

एक योगी चूहे के द्वारा, करे गच्छ को परेशान।
उसके ऊपद्रवको हटाया, पाया बहु सन्मान ॥ आवो ॥ १० ॥

रात में गुरु का पाट उठावे, गोधरा शाकिनी जाण।
उनसे भी तब मुनि रत्ना का, लीना वचन प्रमाण ॥ आवो ॥ ११ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सांप काटते कहा संघसे, अपना भविष्य ज्ञान।
संघनेभी वह जड़ी लगाई, हुये गुरु सावधान ॥ आवो ॥ १२ ॥

भस्म ग्रहकी अवधि होते, शासन के सुलतान।
आनन्द विमल गुरु जिन्हों को, नमे राज सुरत्राण ॥ आवो॥ १३ ॥

क्रियोद्धारसे मुनिपंथ को, उद्धरे युग प्रधान।
ज्ञान कृपासे दूर हटावे, कुमति का उफाण ॥ आवो ॥ १४ ॥

जेसलमेर मेवात मोरबी, वीरमगाम मैदान।
सत्य धर्म का झंडा गाड़ा, दिन दिन बढ़ते शान ॥ आवो ॥ १५ ॥

मणिभद्र सेवा करे जिनकी, विजयदान गुरु मान।
उनके पट्ट प्रभाविक सूरि, हीर हीरा की खाण ॥ आवो ॥ १६ ॥

इन गुरुओं की करे आशतना, वह जग में हैवान।
भक्ति नीर से चरणों पूजे, चारित्र दर्शन ज्ञान ॥ आवो ॥ १७ ॥

काव्यम्— (वसंत तिलका)

हिंसादि, दूषण विनाश युग प्रधान-
श्रीमद् जगद् गुरु सुहीर मुनीश्वराणां
उत्पत्ति मृत्यु भव दुःख निवारणाय,
भक्त्या प्रणम्य विमलं चरणं यजेहं ॥ १ ॥

मंत्र

ॐ श्रीं सकल सूरि पुरंदर जगत्गुरु भट्टारक श्री हीर विजयसूरि चरणेभ्यो जलं समर्पयामि स्वाहा ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(२)

द्वितीय चँदन पूजा

दोहा

विजयदानसूरि विचरते आये पाटणपुर।
उपदेश से भविजीवको, मार्ग बतावे धूर ॥ १ ॥
गुरुवर की सेवा करे, मणिभद्र महावीर।
करे समृद्धि गच्छ मे, काटे संघ की पीर ॥ २ ॥
इस समय गुरुदेव को, हुआ शिष्य का लाभ।
तपगच्छ में प्रतिदिन बढे, धर्मलाभ धनलाभ ॥ ३ ॥

(ढाल—२)

(तर्ज—धन२वो जग में नर नार)

धन धन वो जग में नर नार, जो गुरुदेव के गुण को गावें ॥टेर॥
पालनपुर भूमिसार, ओसवाल वंश उदार।
महाजन के घर श्रीकार, प्रल्हादन पासकी पूजा रचावे ॥धन०॥१॥
धन सेठजी कूंराशाह, नाथी देवी शुभ चाह।
चले जैन धर्म की राह, धर्म के मर्म को दिलमें ठावे ॥ धन० ॥ २ ॥
संवत् पन्द्रहसो मान, तिर्यासी मिगसिर जाण।
हीरजी का जन्म प्रमाण, शान शौकत जो कुल की बढावे ॥धन०॥३॥
शिशु वय में हीर सपूत, परतिख ज्यूं शारद पूत।
बल बुद्धि से अद्भुत, ज्ञान क्षय उपशम के ही प्रभावे ॥धन० ॥४॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पड़िक्कमणां प्रकरण ढाल, योग शास्त्र व उपदेश माल ।
पयन्ना चार रसाल, पढे गुरु के भी दिलू को लुभावे ॥धन०॥५॥

हीरजी पाटण में आय, नमें दानसूरि के पाय ।
सुने वाणि हर्ष बढाय, पाकदिल संयम रंग जमावे ॥ धन० ॥६॥

पन्द्रहसे छ्याणु की साल, ले दिक्षा हीर सुकुमाल ।
बने हीर हर्ष, मुनि बाल, न्याय आगम का ज्ञान बढावे ॥ धन०॥७॥

संवत् सोला सो सात, पन्यास हुये विख्यात ।
हुये वाचक संवत आठ, पाट सूरि की दसमें पावे ॥धन०॥ ८ ॥

हुए पूज्य सूरीश्वर हीर, नमे सूबा राज वजीर ।
चन्दन चर्चित गंभीर, धीर चारित्र सुदर्शन गावे ॥ धन० ॥ ९ ॥

काव्य—हिंसादि०

मंत्र—ॐ श्रीँ० चन्दनं समर्पयामि स्वाहा ॥ २ ॥

तृतीय पुष्प पूजा

दोहा

हीर हर्ष हुये सूरि, हुआ घरघर आनन्द ।
शासन की शोभा बढी, यश फैला गुण कन्द ॥ १ ॥

(ढाल-३)

(तर्ज—कदमों की छाया में प्रभु के पैर पूजना)

हीर सूरिश्वर जी, गुरु के गुण गाइये ॥ टेर ॥
हीर मुनीश्वर, हीर सूरीश्वर । अकल महिमा रे
भक्ति से फल पाइये ॥ हीर० ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फत्तेहपुर में, उपकेश घर में । है तप भक्ति रे
तप से ही सुख पाइये ॥ हीर० ॥ २ ॥

सती शिरोमणि, सद्गुणी रमणी । श्राविका चंपा रे
दो मासी तप ठाइये ॥ हीर० ॥ ३ ॥

देव कृपा से, गुरु कृपासे । तप गुण बढते रे
कृपा को वारी जाइये ॥ हीर० ॥ ४ ॥

हुई तपस्या, मोक्ष समस्या । आनन्द हेतु रे
उच्छव रंग चाहिये ॥ हीर० ॥ ५ ॥

तप की सवारी, जूलूस भारी । बाजित्र बाजे रे
जय नारे भी मिलाइये ॥ हीर० ॥ ६ ॥

अकबर बोले, लोक हैं भोले । झूठी तपस्या रे
चंपा को कहै आइये ॥ हीर० ॥ ७ ॥

पूछे चंपा से, किन की कृपा से । रौजा मनाये रे
सच्चा ही बतलाइये ॥ हीर० ॥ ८ ॥

पार्श्व प्रभू की, हीर गुरू की । चम्पा सुनावे रे
कृपा का फल पाइये ॥ हीर ॥ ॥ ९ ॥

कृपालु नामी हीरजी स्वामी । ठाना शाही ने रे
इन से ही मिलना चाहिये ॥ हीर० ॥ १० ॥

गुरु चरन में भक्ति सुमन है । चारित्र दर्शन रे
कर्मों का गढ ढाइये ॥ हीर० ॥ ११ ॥

काव्यम्—हिंसादि ०

मंत्र—ॐ श्रीं ० पुष्पाणि समर्पयामि स्वाहा । २

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चतुर्थ धूप पूजा

दोहा

अकबर दिल में चिंतवे, भारत का सुल्तान ।
बुलाउं गुरु हीरजी, जैनो का सुल्तान ॥
थानसिंह ओसवाल को, बोले अकबर शाह ।
बुलावों गुरु हीर को, सुधरे जीवन राह ॥ २ ॥
थानसिंह कहे जहांपनाह, दूर ही है गुरुराज ।
अकबर कहे पर भी उन्हें, बुलावो मय साज ॥ ३ ॥

(ढाल—४)

(तर्ज— शहीदो के खुन का असर देख लेना)

हीर सूरि को बुलाना पड़ेगा, हमको भी दर्शन दिलाना पड़ेगा ॥
धन गुर्जर है ऐसे गुरु से, वहां से गुरु को बुलाना पड़ेगा ॥हीर॥१॥
राजा राणी दर्शन पावे, उनकाही दर्शन दिलाना पड़ेगा ॥हीर ॥ २ ॥
नाम जापसे दुःख विडारे, ऐसे फकीरको यहां लाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
वहीं से स्हारा देवे चंम्पा को, उस ओलिया से मिलाना पड़ेगा॥४॥
घर दुनिया को दिल से छोड़े, खुदा का बन्दा बताना पड़ेगा ॥ ५ ॥
सब जीवों की रक्षा चाहे, यही कृपा रस पिलाना पड़ेगा ॥हीर॥६॥
त्यागी ध्यानी पंडित ज्ञानी, उन्हों का उपदेश सुनाना पड़ेगा ॥ ७ ॥
सब मजहब से वाकेफ साहिब, उनका भी मजहब सुनाना पड़ेगा ॥८॥
तेरा गुरु है मेरा गुरु है, ठेका भी हो तो तुड़ाना पड़ेगा ॥ ९ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शाह अकबर यों भाव बतावे, हीरे का पाक खिलाना पड़ेगा ॥१०॥
चारित्र दर्शन गुरु चरण में, ध्यान का धूप जमाना पड़ेगा ॥ ११॥

काव्यम्--हिंसादि०

मंत्र—ॐ श्रीँ० धूपम् समर्पयामि स्वाहा ॥ ४ ॥

पंचम दीपक पूजा

दोहा

अब अकबर गुजरात में, भेजे मौदी कमाल ।
बोलावे गुरु हीर को, फत्तेहपुर खुशहाल ॥१॥
संवत् सोलसो चालिसा, आये श्री गुरु हीर ।
बने गुरु उपदेश से, धर्मी अकबर मीर ॥ २ ॥

(ढाल—५)

(तर्ज— घड़ी धन्य आजकी सबको, मुबारक हो २)

इसी दुनियां में है रोशन, "जगद गुरू" नाम तुम्हारा॥
कई को दीनी जिनदिक्षा, कई को ज्ञान की भिक्षा ।
कई को नीति की शिक्षा, कई का कीना उद्धारा ॥ इसी० ॥ १ ॥

लूंकापति मेघजी स्वामी, अठ्ठाइस शिष्य सहगामी ।
सूरि चेला बने नामी, करे जीवन का सुधारा ॥ इसी० ॥ २ ॥

कीड़ी का ख्याल दिलवाया, अजा का इल्म बतलाया ।
मुनि का मार्ग समझाया, संशय सुल्तान का टारा ॥ इसी० ॥ ३ ॥

शाही सन्मान तो पाया, पुस्तक भण्डार भी पाया ।
बड़ा आग्रा में खुलवाया, अकब्बर नाम से सारा ॥ इसी० ॥ ४ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तपगच्छ द्वेष दिलधारा, करे कल्याण खटचारा।
उसी का गर्व ऊतारा, सभी के दुःख को टारा ॥ इसी० ॥ ५ ॥

फतेपुर, आगरा, मथुरा, शुरिपुर लाभ मालपुरा।
भुवन प्रभु के बने सनूरा, मोगल के राज्य में सारा ॥ इसी० ॥६॥
करे कोई गुरू पूजन, दीये हाथी हरे उलझन।
करे वस्त्रादि से लुंछन यतिम याचक का दिल ठारा ॥ इसी. ॥७॥
तीरथ का टैक्स हटवाया, जजिया कर भी मिटवाया।
शत्रुंजय तीर्थ फिर पाया, गुरु आधिन बने सारा ॥ इसी० ॥८॥
अकब्बर ने समझ लीना, बड़ा फरमान लिख दीना।
हुकुम सालाना छै महिना, यही उपकार तुम्हारा ॥ इसी०॥९॥
जगत पर कीना उपकारा जगदगुरु आप हैं प्यारा।
अकबर ने यूं उच्चारा, दिया बीरूद जयकारा ॥ इसी० ॥१०॥
गुरु उपदेश को पीकर, अकब्बर का हुकुम लेकर।
जिता शाहजी बने मुनिवर, बना शाही यती प्यारा ॥ इसी० ॥११॥
नमे सुल्तान आजमखान, सिरोही देवड़ा सुल्तान।
नमे प्रताप टेक प्रधान, गुणों का है नहीं पारा ॥ इसी० ॥ १२ ॥
मुग़ल सम्राट् दरबारा, खुला शुरू में गुरु द्वारा।
पीछे जिनचन्द्र सिंह प्यारा, गये सेनादि गुरु सारा इसी० ॥ १३ ॥
गुरु चारित्र सीतारा, विमल दर्शन का आधारा।
बिना गुरु कोई नहीं चारा, गुरु दीपक से उजियारा इसी०॥ १४ ॥

काव्यम्—हिंसादि०

मंत्र—ॐ श्रीँ० दीपकं समर्पयामि स्वाहा ॥५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षष्ठी अक्षत पूजा ।

दोहा

जगदगुरु करे जगत में, भ्रातृ प्रेम प्रचार।
अहिंसा के उपदेश से, अहिंसक बने नरनार ॥ १ ॥

(ढाल—६)

अहिंसा का डंका आलम में, श्री जगदगुरु ने बजवाया।
महावीर का झंडा भारत में, श्री हीर सूरी ने फहराया ॥ टेर ॥

मय रानी रोह नगर स्वामी, शिकार को छोड़े सुख कामी।
सुलतान सिरोही का नामी, उनका, हिंसादि छुड़वाया ॥ १ ॥

अकबर सुबह में खाता था, सवा सेर कलेवा आता था।
चिड़ियों को जीभ मंगाता था, उससे उसका दिल हटवाया ॥ २ ॥

कई पशु पक्षि को मारा था, और कई पर जुल्म गुजारा था।
अकबर का यह नित्य चारा था, उसके लिये माफी मंगवाया ॥ ३ ॥

पिंजर से पक्षि छुड़वाये, कई कैदी को भी छुड़वाये।
कई गैर इन्साफ को हटवाये, कइयों का जीवन सुलझाया ॥ ४ ॥

काला कानून था जजिया कर, जनता को सतावे दुःख देकर।
अकबर को मजहब समझा कर, जजिया कर पाप को धुलवाया ॥५॥

पर्यूषण बारह दिन प्यारे, किसी जीवकों कोई भी नहीं मारे।
अकबर यूं आज्ञा पुकारे, फरमान पत्र गुरु ने पाया ॥ ६ ॥

संक्राति के रवि के दिन में, नव रोज मास ईद के दिन में।
सूफियान मिहीर के सब दिन में, जीवघात शाही ने रुकवाया ॥७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फिर जन्म मास अपना सारा, जीव घात यूं छै महिना टारा।
चारित्र सुदर्शन भय हारा, गुरु चरण में अक्षत पद पाया ॥ ८ ॥

काव्यम्-हिंसादि०

मत्र—ॐ. श्रीँ अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा ॥ ६ ॥

सप्तमी नैवेद्य पूजा

दोहा

जगदगुरु ने जीवन में, कीना तप श्री कार।
तेले बेले सैकडों, व्रत भी चार हजार ॥१॥
आंबिल निवी एकासना, और विविध तप जान।
प्रति दिन बारह द्रव्य का, करे गुरुजी परिमाण ॥२॥
काउसग्ग ध्यान अभिग्रह करे, प्रतिमा बार मनाय।
दशवैंकालिक नित्य जपे, चार क्रोड़ सज्झाय ॥३॥
पण्डित एकसो आठ थे, साधु कई हजार।
एक सूरि उवझाय आठ, यह गुरु का परिवार ॥४॥

(ढाल—७)

(तर्ज—रामकलि—केशरिया ने कैसे जिहाज तिराया)

जगद् गुरु आज अमोलक पाया, नर भव सफल मनाया।टेर।
जगद् गुरु ने जगत के हित में, सारा जीवन बिताया।
आपके शिष्य प्रशिष्यो ने भी, कीना काम सवाया।जगत०।१।
वाचक शान्तीचन्द्र गणि ने, कृपा ग्रन्थ बनाया।
सुन कर शाह ने अपने वदन में, मुरदा नहीं दफनाया।जगत०।२।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कल्याणमल के कष्ट पिंजर से, खंभात संघ को छुड़ाया।
हुमायूं का इल्म बताया, जम्बू सूत्र सुनाया।जगत०।३।
भानुचन्द्र ने शाही द्वारा, वाचक का पद पाया।
शाही के पुत्र को ज्ञान पढाया, तीरथ पट्टा पाया। जगत०।४।
पट धर सेन सूरि आलम में, गौतम कल्प गवाया।
पाटण राज नगर खंभात में, पर गच्छी को हराया।जगत०।५।
सूरत में श्रीभूषणदेव को, वाद में दूर भगाया।
शाही सभा में पांच से भटसे, वाद में जय अपनाया।जगत०।६।
अकबर से षट् जल्प को पाया. मृत धन आदि हटाया।
सवाई हीर का बिरूद पाया, परतिख पुन्य गवाया।जगत०।७।
अकबर के पंण्डित सभ्यों में, जिनका नाम लिखाया।
विजय सेन भाणचन्द्र अमर है, शासन राग सवाया।जगत ८।
अष्टावधानी नंदन विजयजी, सिद्धि चन्द्र गणीराया।
विवेक हर्ष गणी इन्हो ने, शाही से धर्म कराया।जगत०।९।
पड पट्टधर श्री देव सूरि ने, वादी से जय पाया।
सुर देवचन्द आदि देवों ने, गुरु का मान बढाया।जगत०।१०।
बिरूद जहांगीर महातपा यूं, सलीम शाह से पाया।
राणा जगतसिंह से भी दया का, चार हुकुम लिखवाया।ज०।११।
वाचक विनय ने लोक प्रकाश से, सच्चा पंथ बताया।
यशो विजयजी वाचक गुरु के, ज्ञान का पार न पाया।ज०।१२।
खरतर पति जिन चन्द्र सूरि ने, जगगुरु का यश गाया।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फरमान सप्ताह की अहिंसा का, अकबर शाह से पाया ।ज०।१३।
गुरु के नाम से पावे धन सुत. यश सौभाग्य सवाया ।
चारित्र दर्शन गुरु चरणों में. भाव नैवेद्य धराया ।जग०।१४।

काव्यम्—हिंसादि

मंत्र—ओं श्रीँ० नैवेद्यम् समर्पयामि स्वाहा—

अष्टमी फल पूजा ।

--दोहा—

सोलसो तेपन भादो में, सुदि ग्यारस की रात ।
गुरुजी स्वर्ग में जा बसे, ऊना में प्रख्यात ॥ १ ॥

अग्निदाह के स्थान में, फले बांझ भी आम ।
सुन कर दुःख दिल में धरे, अकबर अपने धाम ॥ २ ॥

अकबर से पाकर जमीन, लाडकी करे वहाँ स्तूप ।
जो परतिख परचा पूरे, नमे देव नर भूप ॥ ३ ॥

आबू पाटण स्थंभना, राजनगर जयकार ।
सूरत हैद्राबाद में, बने श्री हीर विहार ॥ ४ ॥

आगरा महुवा मालपुर, पटणा सांगानेर ।
नमुं प्रतिमा स्तूप पादुका जयपुर आदि शहेर ॥ ५ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(ढाल—८)

(तर्ज—सरोदा कहां भूल आये)

आवो भाई आवो, गुरु के गुण गाओ ॥ टेर ॥
देवीं कहे देवेन्द्र सूरिके , चरण कमल में जाओ ।
बढती उन्ह के गच्छ की होगी, कुपथ में मत जाओ ॥ गुरु ॥ १
पद्मावती कहे तिलक सूरि के, शिष्य को स्तोत्र पढ़ाओ ।
प्रतिदिन तपगच्छ बढ़ता रहेगा,प्रभसूरि ! मत घबराओ ॥गुरु॥ २
मणीभद्र कहे दानसूरि को, विजयदान वरसावो ।
कुशल करूंगा विजय तपाका विजय ध्वजा फरकावो ॥गुरु॥ ३
ऐसे गच्छ में जगद्गुरु,श्री हीर सूरि को गावो ।
वर्ष इक्कीस हजार चलेगा, वीर शासन मन लावो ॥गुरु॥ ४
देश प्रदेशों में क्यों दोड़ो, गुरु चरणों में जावो ।
संग्राम सोनी पेथड़ सम ही, लक्ष्मी इज्जत पावो ॥ गुरु ॥ ५
जगद्गुरु के चरण कमलमें, फलपूजा फल पावो ।
चारित्र दर्शन ज्ञान न्याय से, जय जय नाद गजावो ॥गुरु ॥ ६

काव्यम्—हिंसादि०

मंत्र—ॐ. श्रीँ० फलं समर्पयामि स्वाहा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कलश

(राग—वड़ंस— अबतो पार भये हम साधो)

आज तो जगद्गुरु गुण गाया, आनन्द मंगल हर्ष सवाया॥ टेर॥

वीर जगत्गुरु पाट परंपर हुये सूरि गणी मुनिराया।
हुये बुद्धिविजय गणी जिनने, संवेगरंग का कलश चढाया॥ १॥

आप के आदिम पट्टप्रभावक, मुक्तिविजय गणी शासन राया।
आपके पट्टमें विजय कमल सूरि, स्थविर विनय विजयजी गवाया

आपके शिष्य शासन दीपक, श्री चारित्र विजय गुरुराया।
आदिम जैन गुरुकुल स्थापक, जिनके यशका पार न पाया॥ ३॥

आपके सेवक दर्शन ज्ञानी, न्याय ने जयपुर में गुण गाया।
संवत् उन्नीसो सत्ताणूं, जगत्गुरु का दिन मनाया॥ ४॥

तप गच्छ मन्दिरमें जगगुरु के, चरण कमल सब को सुखदाया।
सेवे भंडारी कोचर जी, चोरड़िया पालरेचा सुहाया॥ ५॥

म्हेता, छाजड़ बैद सचेती, ढड्ढा गोलेच्छा सुखपाया।
ढौर गहेलड़ा वम् छजलानी, नौलखा सिंघी व खींसरा भाया॥६॥

कोठारी लोढा करणावट, वाफणा पटनी शाहा उमाया।
जोंहरी हरखावत पोरवाला, श्री श्रीमाल हैं भक्ति रंगाया॥ ७॥

संघ ने मिल कर भाव सवाया गुरुपूजन का पाठ पढाया।
शिर नमायाँ जयजय पाया चारित्र दर्शन नाद गजाया॥ ८॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ श्रीदादाजी श्रीहीरविजय सूरीश्वरजी की आरती

आरति श्रीगुरुदेव चरण की,
कुमति निवारण सुमति पूरण की आ० ।
पहेली आरती श्रीगुरुदेव की,
दुरित निवारण पुन्यकरण की आ० ॥१॥
दूसरी आरती धरम धरन की,
अशुभ करमदल दूरीं हरण की आ० ॥२॥
तीसरी दश यति धरम धरण की,
तप निरमल उद्धार करण की आ० ॥३॥
चौथी संयम श्रुत धरम की,
शुद्ध दया रूप धरम बरधण की आ० ॥४॥
पांचमी सभी सद्गुण ग्रहण की,
दिन दिन जस परताप करण की आ०॥५॥
एह विध आरती कीजै गुरुदेव की,
समरण करत भवि पाप हरण की आ०कु०।६।

इति श्री गुरुदेवजी की आरती ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

। अर्हम् ।

श्रीजगत्गुरुजीकी छोटी अष्टप्रकारीपूजा

❀ प्रथम जलपूजा ❀

॥ दोहा ॥

अह समसमरी सारदा, सदगुरु चरण नमाय
वसुविध हीरसूरींद की, पूजा रचूं सुखदाय ॥ १ ॥
निर्मल जल झारी भरी, आणी अंग उमंग ।
गुरु पद की पूजा करूं, जिम सुख पाऊं चंग ॥ २ ॥

॥ ढाल सुरती ॥

पूजा पहिली करियें, गुरुपदनी सुखकार
अनुभव वरीये निज गुण, धरिये अधिक उदार ॥ १ ॥
पूजा जलकी सावचे, चढते भाव परिणाम
मिथ्यामल दूरे हरे, पामें निरमल ठाम ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

अशुभकर्मविपाकनिवारणं परमशीतलभावविकासकम्
स्व-परवस्तुविकाशनमात्मनः श्रीगुरुहीरसूरीश्वरपूजनम् ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीहीरविजयसूरीश्वरचरणकमलेभ्यो जलं यजामहे नमः ॥ १ ॥

द्वितीय चंदन पूजा ।

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा गुरुतणी, करिये चित्त उल्लास ।
मृगमद चंदनशुं मिली, केसर शुद्ध बरास ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

केसर चंदन घसी घणो, मांहि मेलो घनसार ।
रत्नजड़ित कचोलडे, धरिये चित्त उदार ॥१॥
गुरु पद पूजा भवि जन, भव दव ताप समाय ।
दूजी पूजा कीजीये, अनुभव लच्छी पाय ॥२॥

॥ श्लोक ॥

परमुदारगुणं गुरुपूजनं जगदुपाधिचयाद् रहितं जितम् ।
परमपूज्य पदस्थितमर्चत विनयदर्शन केसरचन्दनैः ॥१॥
ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरेभ्यश्चन्दनं यजामहे नमः ॥ २ ॥

अथ तृतीय पुष्पपूजा ।

॥ दोहा ॥

त्रीजी पूजा कुसुमनी, करियें निर्मल चित्त ।
पूजा करतां भवि लहे, उत्तम अनुभव वित्त ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ढाल ॥

जाई जूई केतकी, उमणो मरुओ सार
मोगरो चंपक मालती, श्रीगुरु चरणे धार ॥ १ ॥
बोलसिरी जाइ फूलसुं, केवडो सरस गुलाब
शुद्ध सुगंधित फूलें करी, गुरु पूजो भरी छाब ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

सरसपुष्पसुगन्धितमर्चितं सकलवाञ्छितदायकचर्चितम्
सकलमङ्गलसंभवकारणं गुरुयुगपादपपूजनधारणम् ॥ १ ॥

ओं ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरणकमलेभ्यः पुष्पं यजामहे नमः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी धूप पूजा ।

॥ दोहा ॥

चोथी पूजा धूपनी, करियें हर्ष अमंद ।
कुमति मिथ्यात्व निवारजो, पूजो श्रीहीर सूरींद ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

अगर चंदन वली मृगमद, कुंदरु ने लोबान
वस्तु सुगंध मिलाय के, करियें ए धूपधान ॥ १ ॥
धूप करो गुरु सन्मुख, आणी भाव विशाल ।
जिम पामो भवि संमति, दिन दिन मंगल माल ॥ २ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्लोक ॥

समसुगन्धकरं तपधूपनं सकलजन्तुमहोदयकारणम्
सकलवाञ्छितदायकनायकं श्रीगुरुहीरसूरीचरणं यजेत् ॥ १ ॥

ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्यों धूपं यजामहे नमः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी दीपकपूजा ।

॥ दोहा ॥

पांचमी पूजा गुरुतणी, करियें दीपक सार
मिटे तिमिर मिथ्यात्व सब, पद पूजा अधिकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

भाव दीपक गुरु आगलें, धरियें शुभ व्यवहार
द्रव्य दीपक भलें करीइ, जन्म सफल अवतार ॥ १ ॥

दीप पूजा करतां सही, लहीए ज्ञान विशाल
गुरु पूजा मनोवांछित, आपे मंगल माल ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

विमलबोधसुदीपकधारकैः परमज्ञानप्रकाशकनायकैः
गुरुगृहे शुभदीपकदीपनं भवजले निधिपोतसमो गुरुः ॥ १ ॥

ओँ ह्रीं श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्यो दीपं यजामहे नमः ॥ ५ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ षष्ठी अक्षतपूजा ।

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा भवि करो; अक्षय शुद्ध अखंड ।
चन्द्र किरण सम उज्जवला, धर्म स्थिति गुरु मंड ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

उज्ज्वल तंदुल अक्षत, विविध प्रकारनां लाय ।
कंचन मणि रयणें जडया; थाल भरी भरमाय ॥ १ ॥

स्वस्तिक करि गुरु सन्मुखे, भावना भावो सार ।
अक्षत पूजा जो करे, ते लहे सुख अपार ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

परम-अक्षतभावकृतेऽर्जिते ददति वाञ्छितसुखसमुद्भवैः ।
सुगुरुपूजनलब्धिसमागमे विजयहीरसूरीश्वर-अर्चितः ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीं श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्योऽक्षतं यजामहे नमः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी फलपूजा ।

॥ दोहा ॥

सातमी पूजा भवि जना, करियें हर्ष अपार ।
ए पूजा करतां लहो, अनुभव फल सुखकार ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सिताफल, दाडिम सरस बदाम ।
निमजा पिस्ता चारोली, नवनवा मेवां नाम ॥ १ ॥
आंबा रायण करणां, नारिजी फल सार ।
छाब भरी गुरुने पूजो फल पूजा सुखकार ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

गुणफलैर्मलदोषनिवारकं बहलमोहतिमिरविनाशकम् ।
सकलसेवकवाञ्छितदायकं विजयहीरसूरीश्वरनायकम् ॥१॥

ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्यः फलं यजामहे नमः ॥ ७ ॥

अथाष्टमी नैवेद्यपूजा ।

॥ दोहा ॥

गुरु पूजा प आठमी, कीजिये मन उल्लास ।
शुभ नैवेद्य भले भाव से, धरो गुरु सँमुख पास ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

लाडु घेबर पेडा, खुरमां खाजां सार ।
मोतीचूर नें बरफी, मावो वली कंसार ॥ १ ॥
साकर फेणी जलेबी, विविध जाति पकवान ।
ठवो श्रीगुरु मुख आगले, अष्टमी पूजाए मान ॥ २ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्लोक ॥

सकलसूरिपुरन्दरसूरय परमपूज्यगुरुश्रीहीरय ।
भविजना शुभ भावकपूजनं लहति वाञ्छितसुखसमागमम् ॥१॥

ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्यो नैवेद्यं यजामहे नमः ॥ ८ ॥

इम गुरु गुण वृंदं शुद्ध भावेन कित्ती,
परमगुण निधानं ऋद्धिविजय स्तवंती ।
प्रति दिवस मनंतं पूजयं पूजयंती,
परमसुख निवासं लक्ष्मी लीला लहंती ॥ १ ॥

ओँ ह्रीँ श्रीँ श्रीपरमगुरुश्रीहीरविजयसूरीश्वरचरण-कमलेभ्योऽष्टद्रव्यं यजामहे नमः

॥ काव्यम् ॥

श्रीमत्तपागण शुभाम्बर घर्मरश्मिः
श्रीसूरि हीरविजयो ऽजितज्ञानलक्ष्मीः ।
यस्योपदेश वचनाद् यवनेषु मुख्यो
हिंसानिराकृति परः प्रगुणो बभूव ॥ १ ॥

॥ इति समाप्ताऽष्टप्रकारी पूजा ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथ दादाजी श्रीहीरविजयजी स्तवन ॥

सोभागी श्रीगुरु हीरविजय सूरीन्द्र, मन मोहन श्रीगुरु हीर० ।
मैं सेवक सांनिध्यकारी, श्रीगुरु पूरै मनोरथ वृन्द सो० ॥ १ ॥
दोलत दायक श्रीगुरु मेरो, दादा हुं चरणनो दास ।
श्रीगुरुनां बिरुद छे भारी, धरिस ही मन आस सो० ॥ २ ॥
तो सेव्यां संकट टलेंजी, मिलै मुजने मोहन वेल ।
दादा ! तुम चरणां सुपसायै, पामै हरखनी रेल सो० ॥ ३ ॥
तपगच्छ अंबर दीनकर जैसो दादाहीरसूरीन्द्र भाह ।
अकब्बर बादकारीन जीतै, असुर सहु जिन्द सो० ॥ ४ ॥
परगट दादो देवताजी, परचा पूरै सूरीन्द ।
वाचक जस इम वीनवैजी, संघसकल आणन्द सो० ॥ ५ ॥

स्तवन—चाल रेखता

श्रीगुरु हीरदेवके दर्शन, दिल मुज द्योत हे परशन् ।
द्योत आनन्द धनमेरे, सम्पत्ति मिलत बहुतेरे श्री. ॥ १ ॥
गुरु ! तुम ध्यान दिलधारूं, दुरबुद्धमती दूरवारूं ।
श्रीगुरु चरणकी सेवा सेवक कुं दीजिये मेवा श्री. ॥ २ ॥
दादा ! दरसण मोहि दीजै, दादा तुम सो हिला कीजै ।
जे कोई समरण जो पावै, तोश्र चिन्ती लक्ष्मी घरआवै श्री. ॥ ३ ॥
दादा ! तुम समरण करती, बाट घाटमें सुखै बहन्ता ।
भीत उपद्रव सहु जावै, श्रीगुरु ध्यान दिल ध्यांवै श्री. ॥ ४ ॥
दादा ! हद अरज दिलधारो, सेवकके कार्य सहु सारो ।
श्रीवीजैहीरसूरी देवा !, पावो सुजश तुम गुरुसेवा श्री. ॥ ५ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ दादा हीरविजय सूरी स्तवन ।

आज बधाई मेरे रङ्ग बधाई, गुरुचरणां सुपसायै रे, आ. ।
मौतिडे मेह वुठारे ॥ आ. ॥
मङ्गलआज मेरेघर फलीयां, सुखसम्पत्तिघरआईरे ॥ आ. ॥ १ ॥
वरषानंद भयो दिलमैरे, सुद्ध समकितपालपाइ रे ॥ आ. ॥ २ ॥
श्रीगुरुचरण कमल दरशण तें, सुमति सही दिल आई रे ॥ आ. ३
दादा श्रीबिजै हीरसूरीश्वर, दिशो दिशि सुजस गवाई रे ॥ आ. ४

॥ अथ हीरविजय पद ॥ ॥ चाल जिंदवारी ॥

श्रीगुरुध्यान धरो सदा, शुभ मन सुखकार एटेक ॥
श्रीगुरुमाने जै दिलधरै, पामै सुख अपार ।
श्रीगुरुध्यान जै भावतां गुरु आतम आर ॥ श्री. ॥ १ ॥
गुरुदरशण सुख उपजै, होवे जय जयकार ।
समकित पामे प्राणीयां, पूजो सह नरनार ॥ श्री. ॥ २ ॥
निरमल पहेरी धोतियां, घसी केसर घनसार ।
श्रीगुरुदेवकुं पूजीयैं, गुरु जग आधार ॥ श्री. ॥ ३ ॥
तपगच्छनायक राजीयो, दादो सेवक आधार ।
दादो दुनियां मे देवता, जिनशासन जयकार ॥ श्री. ॥ ४ ॥
तपगच्छसंघ सांनिध्यकरो, करो सहु विघन निवार ।
दिन दिन जस चढती कला, वधै पुत्रपरिवार ॥ श्री. ॥ ५ ॥
श्रीहीरविजय सूरिसाहिबो, गुरु गुणनो भंडार ।
चरणकमलमें मेटीवा, फतैन्द्रविजयके आधार ॥ श्री. ॥ ६ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथ दादा हीरविजय सूरीस्तवन ॥ राग थाये॥

चालो भवी वंदन जईये, हीरविजय सूरी राय चा. ही.
पूजत परमानन्दा, मिले सज्जन सहु भाय ॥ चा. ॥ १ ॥
दादोजी परचा पूरें, तपगछ संघ सवाय ॥ चा. ॥
अकब्बरसाह प्रतिबोधीयों, दिल्लीनों पतिसाय ॥ चा. २ ॥
मारीरोग निवारियो, जीव हिंसा मिटाय ॥ चा. ॥
जमुनां के जल उपरें, गुरुवाट बनाय ॥ चा. ॥ ३ ॥
जिनमत थिरता थापी, जैन धरम दीपाय ॥ चा. ॥
दादोजी सेवकां सांनिध्यकारी, फतेन्द्रविजय गुण गाय ॥चा. ॥४॥

॥ अथ दादाजी पद ॥ राग विलास ॥

देख हो भवि आज, गुरु चरण देख ।
त्रिकरण शुद्धभाव करके, पूजो श्री गुरुराज ॥
अज्ञानतिमिर दूर विणसैं, प्रगटैं ज्ञान आवाज श्री. दे. ॥ १ ॥
श्री गुरुदेवको ध्यान धरत, होत मंगल काज ।
आज मुझ घर हर्ष वर्त्यो, मिल्यो सुखसमाज । श्री. दे. ॥ २ ॥
अष्ट भय सहु दूर विणसैं, सरै सहु मन काज ।
ध्यान धरत सुख उपजत, श्रीगुरुनें आवाज । श्री. दे. ॥ ३ ॥
श्रीगुरु हीरविजयदेव सूरीश्वर, तपगछपति महाराज ।
ज्ञानविमल गुरुचरण सेवत, होत सफल सहु काज । श्री. दे. ॥४॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथ दादा जीका पद ॥

ढाल–उंबरियो ने गाजे हो भटियांणी राणी बड चूवै ।
कांइ झरमर बरसे मेहा । ए देशी ॥

आज दहाडो सफलो हो गुरुचरणांबुज मैं मेटीयां,
कांईप्रगट थांपुण्यनांसाज,अशुभदाहाडाटल्याहोशुभवलीयादेह।
आज माहरां कांई सरीयां मननां काज । आ. ॥ १ ॥
मुज घर सुरतरू फलीयो, हो मुज मिलीया गुरुदेव हमारो ।
थाहरो चरनारो दासा आस धरी, तुम पासे ही मन उल्लासे ।
आवियो गुरुदास निबाजो रीज । आ. ॥ २ ॥

गुरु दरशण अब पायो हो मन भायो,
वंछित पामियो रमीयो गुरुगुणे ।
आज गुरुगुणे जे मर रमता हो मन गमता,
लछी पांमता कांई लहता गुरुगुणे आवाज । आ. ॥ ३ ॥
श्रीगुरुने परभावे हो कांई दिन दिन,
आनन्द आजे सफल फले साहू काज ।
श्रीगुरुने पर भावे हो बहु पावे घर सुख,
सम्पदा कांई आपदां जाये भाज आ. ॥ ४ ॥
श्रीगुरु देव प्रसादे हो वली बधे,
पुत्र कलत्रथी कांई मिले सुख समाज ।
दयारुचि गुणगावे हो मन भावे,
श्रीगुरु देवनां सेवनां लहि में आज । आ. ॥ ५ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथ दादा जी स्तवन ॥

म्हे तो न्यारा रेहम्यांजी देराणी-
जेठांणी आयै मेला रहम्यांजी । ए देशी ।
म्हारा गुरुदेवजी हो लाल, गुरुदेव विघन निवार । म्हा- ।
गुरुदेवनायक माहरे, ने गुरुदेव है शिरदार,
श्रीगुरुदेव के चरण नम्यांथी, होवे जयजय कार । म्हा. ॥ १ ॥
तपगच्छनायक है गुणलायक, श्रीविजय हीरसूरीन्द ।
श्रीगुरु तोरा पाय नमन्तां, पांमे दोलत वृन्द । म्हा. ॥ २ ॥
साह अकब्बरवादकर्यो तुम जीते गुरु जस पाय ।
जीव दया गुरु तुम वरतावी, तपगच्छ सुजस चढाय । म्हा.
जमुनां जलपर बाट चलाई, चल आयै गुरु पार ।
अधर धारा पर चालण लागे, गुरु करामात है सार । म्हा.
श्रीगुरु दान सूरीश्वर पाटै, हीरविजय में तेज ।
कुमति तिमिर सहु दूर निवारी, जिनशासन करे हेज । म्हा.
वाद चौरासी श्रीगुरु जीत्या, जैनशासन शोभ चढाय ।
दिल्ली मांहे दया वरतावी, जैन धरम दीपाय । म्हा. ॥ ६ ॥
गुरु हीरसूरी सुपसायै, पामें अरथ भण्डार ।
हीरगुरु के जे गुण गावै, दया रुची जयकार । म्हा. ॥ ७ ॥

स्तुति–

दामेवाखिल भूपमूर्द्ध सु निजामाज्ञां सदा धारयन्
श्री मान् शाहि अकब्बरो नरवरो (देशेष्व) शेषेष्वपि ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षण्मासा भयदानपुष्टपटहोद् घोषा नघ ध्वसितः
कामं कारयति स्म हृष्ट हृदयो यद्वाक कलारंजितः ॥ १७ ॥
यदवाचां निचयैर्मुधा कृत सुधा स्वादैरमं दैः कृता-
ल्हादः श्रीमदकब्बरः क्षितिपतिः संतुष्टिपुष्टाशयः
त्यक्त्वा तत्करमर्थं सार्थ मतुलं येषां मनः प्रीतये ।
जैनभ्यः प्रददौ च तीर्थं तिलकं शत्रुंजयो वीधिरन् ॥ २० ॥
(शत्रुंजयप्रशस्ति जै. सा. सं. इ. पृ. ५४३)

॥ अथ दादाजी हीरसूरी पद ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

बिजय हीर भये शुभ ध्यान में, ३
शुद्धदृष्टि निज आतम देखै, परमातम कै ग्यान में । बि. ॥ १ ॥
संयम सुधारस शील का प्याला, छींके अमृत पान में । बि. ॥२॥
समकित पाय मरम सुख पावै, बेठा अविचल थांन में । बि. ॥३॥
अगम अगोचर महिमां तेरी, नहीं पावै अजांन में । बि. ॥ ४ ॥
घरघर साहिब परचा दीजै, भरमै नहीं जिहांन में । बि. ॥५ ॥
जिनही पाया तिनही छिपाया, भाखै नही पर कानमें । बि. ॥ ६॥
चेतविजय चपलता छोडौ, भूलो मत अज्ञान में । बि. ॥ ७ ॥

॥ अथ दादा जी का स्तवन ॥

श्रीगुरु मेरे हीरसूरीन्द्रजयो गुरु,साहिबमेरोहीरसूरीन्दजयो ॥१॥
श्री जिनशासन उद्योत कारी, श्री गुरु हीर भयो ॥ २ ॥
कुंअर पिता नाथी देवी माता खीमसरा गोत्र लयो ॥श्री०ही०॥३॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संवत् पनरे छयाणुवेंवरसे,महोच्छवदीक्षाकी कियो ॥श्री०ही०॥४॥
सोलेसें सातके वर्षे पंडित पदही पायो ॥ श्री० ही० ॥ ५॥
सोलेसें संवत् आठा के वरसें, वाचक पद ही लयो ॥श्री० ही०॥६॥
सोलेसें संवत् दशा के वरसे, सूरीश्वर पदवी थयो ॥श्री०ही०॥७॥
सोलेसें आगरे नगरे, आय चौमासो कियो ॥श्री० ही० ॥ ८ ॥
साह अकब्बरकुं प्रतिबोध्यो, अमारपडह ठयों ॥श्री०ही०॥९॥
लूंपाकमतछांडीमेघऋषिजी,पांचसेशिष्यभयो॥श्री०ही०॥१०
छमासी मरीरोग निवारी, गुरु मेरे दान दियो ॥श्री०ही०॥ ११॥
नगर जीजीया गुरु छोडाया, गउ उपकार कियो ॥श्री० ही०॥१२॥
चिडिया मर तरखी गुरु देव, श्री गुरु जस्स भयो ॥ श्री०ही०॥१३॥
बडा वाद चौरासी जीत्या, जिनमत हरख थयो ॥ श्री०ही०॥१४॥
देस देसमें गुरु जस पायो, हर्षानन्द लयो ॥ श्री० ही० ॥ १५ ॥
तपगच्छपतिश्रीहीरसूरीश्वर,जय यारीज सलहयो॥श्री०ही०॥१६॥
विजय दानसूरीश्वर पाटे,तपगच्छपतितिलकभयो॥श्री०ही०॥१७॥
श्रीरूपरुचि गुरु चरण प्रसाद,दयारुचि सुख भयो॥श्री०ही०॥१८॥

* जगद्गुरु काअष्टक-राग हरिगीत *

श्री तपागच्छ पवित्र गगने, सूर्य सम सूरीश्वरा ।
श्री विजयदान सूरीशपट्टे, आवियाजे गुण धरा ॥
जे जैन शासन स्तम्भ रूपे , राजता आ भूतले ।
ते हीर सूरीश्वर जगत् गुरुने, नमन हो अवनीतले ॥ १ ॥
जे धर्म धोरी मुनि गणना, पण हता महोटा मणि ।
जे पंच महाव्रत पालता, जग जीवने निज सम गणि ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपदेश अमृत पूर जेनों, जगत मांही जल हले ॥ते०॥ २ ॥
जे देव गुरुवर धर्मना, शुद्ध पंथ ने देखाड़ता ।
आ विश्वमां उपकार करता, कर्म मलने गालता ॥
गुणीअल गुरुजी विचर्या, उपकार करवा भूतले ॥ ते. ॥३॥
दिल्ली पति अकबर नरेश ने, बोध आपी रीझव्यो ।
तत्वों जणावीने अहिंसा, स्तंभ रोपी जे गयो ।
आ आंखमां आंसु भरातां, जे जड़े नहीं भूतले ॥ते०॥४॥
श्री वीर प्रभु वाणी गया, जे दयारूपी वेलड़ी ।
जल सींची सींची हेम सूरिए, वेगथी कीधी वड़ो ॥
ते म्लेच्छनां साम्राज्य मां, खीलावी खंते वीरले ते०॥५॥
निज पाटने दीपाववा, सुयोग्य जाणवा ज्ञानथी ।
श्री विजय सेन सूरीशने, निज पाट सोंप्यों मानथी ॥
आयु वितावी जे गयाछे, स्वर्ग सुन्दर भूतले ॥ ते० ॥ ६ ॥
श्री जैन शासन तत्व भासन, सिद्ध सेन दीवाकरा ।
श्री वज्र के देवेन्द्र सूरि, हेम जेवा सक्षरा ॥
श्री हीरजी सम हीर पण, चाल्या जता आंसुढले ॥ते. ७ ॥
भाद्र शुदि एकादशी दिन, नगर उन्नत भूमि ने ।
त्यागी गया स्वर्गे रह्या, त्यां नमन करीये आपने ॥
चरित्र, दर्शन, ज्ञान, न्याय, धधार्या निशदिन भूतले ।
ते हीरसूरि सम्राट बोधक, विजयताम् अवनितले ॥ते. ८॥

—:( ):—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जगद्गुरु की जयन्ती ।

(राग- भैरवी आशावरी, रामकली, धनाश्री)

हीरसूरिको नमामि, जगतगुरु हीरसूरि को नमामि ॥ टेर ॥

कूराशा नाथी का नंदन, ऊकेश वंश सितारा ।
विजयदान सूरि के पट्टमें, जिन शासन जयकारा ॥ ज०१ ॥

तेरह साल की लघु में दीक्षा, बने पंडित सवाया ।
संवत् सोलह दश में जिनने, आचारज पद पाया ॥ ज०२ ॥

सम्राट अकबर को उपदेश से, धर्मतत्व समझाया ।
जैन धर्म का प्रेमी विवेकी, हिंसात्यागी बनाया ॥ ज०३ ॥

अकबर शाह ने फरमानों से, सूरि का मान बढ़ाया ।
हर सालाना छै महीने का, अभय पटह बजवाया ॥ ज०४ ॥

जीव छुड़ाये कैदी छुड़ाये, जजिया कर भी हटाया ।
जैन तीर्थ सूरीको देकर, परवाना भी बनाया ॥ ज०५ ॥

अकबर नृप ने श्रीगुरुजी को, जगद्गुरु पद दीना ।
जगद्गुरु गुजरात पधारे, धर्म उद्योत में लीना ॥ ज०६ ॥

संवत सोलह से त्रेपन में, गुरुजी स्वर्ग पधारे ।
भादों शुदि में एकादशी को, उन्नतपुर से प्यारे ॥ ज० ॥

गुरुकृपा से सेवक पावे, आनंद हर्ष सवाया ।
जगद्गुरु के ध्यान ज्ञान से, फकीर ने फिक्र मिटाया ॥ ज०८ ॥

—:[]:[]:—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गुरु पूजा

पूजा प्रथम जलथी करूं, सुरभी शुचि कलश भरूं,
निज पाप पंकने दूर टाली, भाव निर्मलता वरूं।
मन वचन तननी शुद्धि थी, हुं भावभक्ति आदरूं,
संसार ताप निवारवा, गुरु देवनी पूजा करूं ॥ १ ॥

ॐ श्री गच्छाधिराज श्री मुक्ति विजयगणि वराणां
चरणेभ्यो जल यजा महे स्वाहाः

कस्तुरी वास बरास चन्दन, घोली केसर सुन्दरूं।
पूजुं शीतलता कारणे, मिथ्यात्व भावथी ओसरूं ॥ २ ॥
मन० ॐ श्री० चंदनं यजामहे स्वाहाः

दाउडी जासूद जाइ जूइ, गुलाब केवड़ो मोगरू।
विधविध सुगन्धी पंचरंगी, कुसुमनी छाबोभरूं ॥ ३ ॥
मन० ॐ श्री० पुष्पाणि यजा महे स्वाहाः

मघमघ सुगंधी दशांग तगरु, कृष्ण अगरने कुंदरूं।
धूप धाणामां धूपो उखेवी, उर्ध्व गतिने नोतरूं ॥ ४ ॥
मन० ॐ श्री० धूपं यजा महे स्वाहाः

सोना तणा शुभ पात्रमां, जयणा धरि गोघृत भरूं।
दीपो तणी माला धरूं, अज्ञानतमदूरे करूं ॥ ५ ॥
मन० ॐ श्री० दीपं यजामहे स्वाहाः

गोधूम माणेक अंक अक्षत, शुद्ध मोति पाथरूं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्वस्तिक रचुं रत्नो ठवुं, चारे कुगतिने परिहरूं ॥ ६ ॥
मन० ॐ श्री० अक्षतान् यजामहे स्वाहाः

नव नव रसे भर पूर शुद्ध, निवेद थाली सुन्दरूं।
पकवान्न अर्पू प्रेमथी ज्यूं, अणाहार दशा वरूं ॥ ७ ॥
मन० ॐ श्री० नैवेद्यम् यजा महे स्वाहाः

मनहारी पूरण सरस निर्मल, शुद्ध फल चरणे धरूं।
चारित्र दर्शन फलने पामी, भाव रोगने संहरूं॥ ८ ॥
मन० ॐ श्री० फलानि यजामहे स्वाहाः

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जयपुर की चैत्य परिपाटी।

मन्दिर का नाम	मूलनायकजी का नाम	पता
तपों का मन्दिर	श्री सुमतिनाथजी	घीवालों का रास्ता
पंचायती मन्दिर	श्री सुपार्श्वनाथजी	,,
श्रीमालों का मंदिर	श्री पार्श्वनाथजी	,,
नया मन्दिर	श्री ऋषभदेवजी	मारूजी का चौक
विजय गच्छ का मं०	श्री केशरियानाथजी	कुंदीगरों के भैरूं के पास
मोहनबाड़ी	श्री केसरियानाथजी	सुरजपोल दरवाजा के बाहर
घाट का मंदिर	श्री पद्मप्रभुजी	घाट की गुणी के नीचे
दादाबाड़ी	श्री पार्श्वनाथजी	सड़क मोती डूँगरी
स्टेशन मंदिर	श्री ऋषभदेवजी	हजूर सहाब की कोठी के सामने स्टेशन के पास

लीलाधरजीका उपासरा, यति श्यामलालजीका उपासरा, चौरासी गच्छ की धर्मशाला; पायचन्द्रगच्छका उपासरा, प्रतापचन्दजी ढड्ढ का मकान, आदि में भी चैताला है।

जयपुर के चारों ओर गांवों में मन्दिर

आमेर श्रीचन्दाप्रभुजी मील ८।		चौमूं श्री	मील १८।
सांगानेर महावीर स्वामी (तपगच्छ) श्रीचन्दाप्रभुजी (पंचायती) मील ८।		खोगांव सुपार्श्वनाथजी मील ६। चंदलाई शान्तिनाथजी मील १७।	
बरखेड़ा श्री आदिनाथजी मील १७।		चाकसू शान्तिनाथजी	मील २४।
मालपुरा श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजी (तपगच्छ) ,, श्रीआदिनाथजी (वियज गच्छ)			मील ५०।

मुद्रितः—जयपुर इलैक्ट्रिक प्रिंटिंग वर्क्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com